REVIEW ARTICLE

पं. माखनलाल चतुर्वेदी का मध्यप्रदेश की राष्ट्रीय चेतना में योगदान

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. IX, Issue No. XVIII, April-2015, ISSN 2230-7540

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

पं. माखनलाल चतुर्वेदी का मध्यप्रदेश की राष्ट्रीय चेतना में योगदान

Kanta Devi

M.A. Hindi, Net

---x---

INTRODUCTION

पं.माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म सन् 1988 में मध्यप्रदेश में होशंगाबाद जिले के बाबई नामक स्थान में हुआ। इनके पिता का नाम पं. नंदलाल चतुर्वेदी और माता का नाम सुंदर बाई था। मिडिल पास करने के उपरांत उन्होंने 1903 में नार्मल परीक्षा पास की और फिर सन् 1904 में खंडवा मिडिल स्कूल में अध्यापक नियुक्त हो गए। अपने जीवन में इन्होनें तीन पत्रिकाओं प्रभा, प्रताप और कर्मवीर का संपादन किया। 'कर्मवीर' का प्रकाशन पहले सन् 1919 में जबलपुर से हुआ। उस समय प. माधवराव सप्रे उसके संचालक थे। सप्रेजी की मृत्यु के उपरांत सन् 1925 में पत्रकारिता का संपूर्ण कार्यभार चतुर्वेदी जी पर आ गया। इन्ही साप्ताहिक पत्रिकाओं के माध्यम से इनका पत्रकार रूपी व्यक्तित्व प्रस्फुटित, पल्लवित और प्रतिफलित हुआ। जिसने उनके एक कवि, संपादक और राष्टक्रसेवी रूप को प्रतिष्ठित किया। पं. माखनलाल जी महात्मा गांधी, लोकमान्य तिलक, माधवराव सप्रे, गणेश शंकर विद्यार्थी से प्रभावित होकर कांतिकारी दल में सम्मिलित हुए। स्वाधीनता संग्राम के दौरान उन्हें 1921, 1923 और 1930 में तीन बार जेल यात्रा हुई। इन्होंने बहुत सी कविताएं कारावास में लिखीं। एक भारतीय आत्मा, इनका दूसरा नाम है, जिसे इन्होनें अपनी राष्ट्रीय रचनाओं द्वारा सार्थक करके दिखा दिया है। पं. माखनलाल चतुर्वेदी की गणना श्रेष्ठतम वक्ताओं में होती थी, हिम–किरीटिनी पर इन्हें देव–पुरस्कार मिला है। सागर वि.वि. ने आनरेरी डॉक्टरेट प्रदान किया। राष्टक्रीय सरकार ने उन्हें सन् 1963 में पद्म भूषण से सम्मानित किया। 16 जून 1965 में पं. द्वारका प्रसाद मिश्र मुख्यमंत्री म.प्र. ने इन्हें 7500 रू. एवं प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया। पं. माखनलाल चतुर्वेदी में राष्ट्रीयता, देशप्रेम की भावना अत्यंत गहरी थी, यही कारण है कि वे विदेद्गी सत्ता के क्रोध के द्गिकार हुए और जेल में कष्टमय जीवन व्यतीत किया। 'कैदी और कोकिला' इनकी अत्यंत मार्मिक कविता है, जिसमें विदेशी आआंताओं से दुःखी कैदी की व्यथा दृष्टिगत है, जो अंततः भविष्य में स्वतंत्र भारत के साथ नवीन आशाओं को लेकर चित्रित होती हैं। फिर भी करूणा गाहक बंदी सोते हैं। स्वप्नों में स्मृतियों की श्वासें ढोते हैं। पं.माखनलाल चतुर्वेदी की राष्टक्रीय कवितायें एक भिन्न ही प्रकार की प्रगतिद्गील तत्वों से ओतप्रोत हैं। इनमें एक ओर आग है, तो दूसरी ओर ताप। कुल मिलाकर इनके व्यक्तित्व में देद्गा के प्रति असीम अनुराग ही राष्टक्रीय भावना का विकास करती हैं, जो कि 'घर मेरा हैं', 'दुर्गम पथ' और 'विद्रोही' आदि रचनाओं में देखा जा सकता हैं। इनके जीवन का आदर्द्गा निम्न कविता में अत्यंत स्वच्छ रूप में बिंबित हुआ है – चाह नही मैं सुरबाला के गहनों में गूथा जाउ। मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर देना तु फेंक, मातृभूमि पर शीद्गा चढ़ाने, जिस पथ जावे वीर अनेक। पं. माखन लाल चतुर्वेदी केवल देद्गा प्रेम की भावना से ओत–प्रोत ही नही अपितु देश गौरव, देद्गााभिमान की प्रवृत्ति भी उनमें दृष्टिगत होती हैं। इस प्रेम और गर्व की अनुभूति के कारण ही उनके मन में अत्याचार वाले विदेशी ताकतों के प्रति आक्रोश दिखाई पड़ता हैं और उन्हें खुलकर चुनौती देने का साहस भी है। यह निर्भीकता क्रूरता का पर्याय नहीं है। इस विद्रोह में आत्मदान की भावना हैं। कवि बीज के समान स्वयं मिटकर वृक्ष की हरी–भरी शाखाओं के समान जग में संतप्त प्राणियों को सुख देना चाहता हैं। इस विनाश में चिरंतन विकास के सूत्र हैं। इस प्रकार देशप्रेम उसे वीर भाव की ओर ले जाता है और दीप की तरह स्वयं जलकर देश में आंति का प्रकाश फैलाना चाहता है।

भूमि सा तू पहन बाना आज धानी,

प्राण तेरे साथ है, उठ री जवानी,

पं. चतुर्वेदी की प्रारंभिक रचनाएं प्रभा में प्रकाशित हुई। इनका लेखन कार्य तो द्विवेदी युग से चला आ रहा था, पर प्रकाद्गान की ओर से उदासीन रहे। यही कारण है कि इनका प्रथम कविता संग्रह 'हिम किरीटिनी' सन् 1943 में उस समय प्रकाद्गित हुआ, जब द्विवेदी युग छायावाद और प्रगतिवाद तीनों समाप्त हो चुके थे। पं. चतुर्वेदी त्याग, की मूर्ति थे तथा स्वभाव से स्पष्टवादी और स्वाभिमानी। आंति की भावना उनको रचनाओं में स्वतः दिखाई देती है।

तुम न खेलो ग्राम सिहों में भवानी।

विश्व की अभिमान मस्तानी जवानी।

देश के लिए हंसते–हंसते न्यौछावर हो जाना। स्वयं को राष्ट्र निर्माता के लिए समर्पित कर देना उनके आंतरिक शौर्य और पराक्रम को दिग्दर्शित करता है।

ये न मग हैं तब चरण की रेखिया हैं।

बलि–दिशा की अमर देखा देखियाँ हैं।

इसी प्रकार राष्ट्र, देशभक्ति की भावना, राष्ट्रीय चेतना और आंति के रूप में दिखाई देती हैं।

लाल चेहरा है नहीं, फिर लाल किसके।

लाल खून नही ! अरे कंकाल किसके।।

पं. चतुर्वेदी जी की 'गंगा की विदा' इनकी लम्बी और विशिष्ट रचना है, जिसमें गंगा को इन्होनें भारती की भौगोलिक, आर्थिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक दृष्टियों से देखा है :

शिखर–शिखर पर हिम अश्रु गल रहे,

लहर–लहर पर निर्झर नदिया उसके बल बेहाल चलीं

इसी प्रकार भारत के नदी पहाड़ों में विंध्याचल, बेतवा, नर्मदा का सुंदरतम स्वरूप चेतन और भावमयी चित्रण मिलता है। भारत कृषि भूमि का आकाद्दा, पर्वत, नदी, झरना, फूल, पवन पत्ती सभी इनके लिए अत्यंत आत्मीय हैं।

कुसुम हैं ये, या कि ऋतुओं के चरण रूप हैं

समय श्रम खिल रही लुनाइया ये।

पं. माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय भाग लेने के कारण और अपनी रचनाओं द्वारा उसका प्रसार करने तथा बल प्रदान करने के कारण उनका अपना एक व्यक्तित्व है और उसी रूप में महत्व भी। राष्ट्रीय जीवन के विविध सांस्कृतिक मूल्यों का आह्वान उनकी रचनाओं में स्वतः प्रस्फुटित हुआ है। उनकी रचनाओं में स्वतंत्रता संघर्ष और सांस्कृतिक चिंता का स्वर प्रमुख रहा है। निशस्त्र सेनाना कविता का उद्‌धृत अंश देखें :

''आंतिकर होगें इनके भाव ? विश्व में इसे जानता कौन?

कौन से कठिनाई हैं ? यही, बोलते हैं ये भाषा कौन।''

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय चेतना के कवि हैं। कवि से पूर्व वे एक पत्रकार हैं, अतएव उनकी रचनाओं में कवि की कल्पना समाज और देश की तत्कालीन सच्चाइयों को उजागर करने में अधिक सशक्त और समर्थ दिखाई देती हैं। उनकी रचनाओं में ज्वालामुखी की तरह अंतर्मन धधकता है और विषमता और करूणा का समन्वय भी दिखाई देता है। विराट पौरूष की हुंकार और प्रलयंकर रूप के भी दर्शन होते हैं।

पं. चतुर्वेदी जी ने 1913 में 'प्रभा' पत्रिका का सम्पादन किया। इस समय उनका परिचय गणेश शंकर विद्यार्थी से हुआ। जिनके देशप्रेम और सेवाव्रत का उन पर गहरा प्रभाव पड़ा। सन् 1918 में 'कृष्णार्जुन युद्ध' नाटक की रचना की, 1919 में जबलपुर में कर्मवीर का प्रकाशन किया। 12 जनवरी 1921 को राजद्रोह में गिरतारी के बाद 'प्रताप' का संपादकीय कार्य संभाला। 1927 में भरतपुर में संपादक सम्मेलन के अध्यक्ष और 1943 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन में अध्यक्ष हुए। चतुर्वेदीजी का व्यक्तित्व कवि से अधिक एक सजग, संवेदनशील, जागरूक पत्रकार के रूप में अधिक मुखरित हुआ है। कारण भी यही है कि उनके प्रेरणा स्त्रोत स्वतंत्रता संग्राम सेनानी महात्मा गांधी, माधवराव सप्रे, गणेशशंकर विद्यार्थी इत्यादि महान वीर पुरूष रहे। जिनके मार्गदर्शन में उनका व्यक्तित्व में स्पष्ट निर्मित हुआ। अतएव उनकी छाया चतुर्वेदीजी की रचनाओं में और व्यक्तित्व में स्पष्ट परिलक्षित हुई है। वे ऐसे अनेक पत्रकारों के प्रेरणास्त्रोत के रूप में सदैव स्मरणीय होंगे, जिन्होंने देश की ज्वलंत समस्याओं को पूरी सच्चाई से जनता के समक्ष रखा ही नहीं, अपितु जनचेतना, जनआंदोलन, जनजागृति का माध्यम पत्र–पत्रिकाओं को बनाया। देश की दयनीय अवस्था को दूर कर, अंग्रेज प्रशासन की जड़े कमजोर करने का संकल्प लिया। उनकी प्रमुख रचनायें हिम किरीटनी (1942), साहित्य देवता (1942), हिमतरंगिनी (1949), युग चरण 'समर्पण' वेणु लो गूंजे धरा' और 'माता' (1952) है। 'हिमतरंगिनी' को साहित्य अकादमी पुरस्कार भी मिला। मध्यप्रदेश की राष्ट्रीय चेतना के प्रतिनिधित्वकर्ता के रूप में पं. माखनलाल चतुर्वेदी सदैव स्मरणीय रहेंगे।

www.ignited.in